रात्रिक्लास 6-4-68 ओमशान्ति "स्वर्ग की बादशाही याद है?"

**********

बच्चों की मिशन है पत्थर बुधि को पारस या कांटों को फूल बनाना। सो तो मिशन तुम्हारी चालू है। सभी एक दो को कांटे से फूल बना रहे हैं। इन्हों को भी ऐसा बनाने वाला जरूर क्रिश्चियन क्रिश्चियन आफ फ्लावर होगा। स्वर्ग की स्थापना वा फूलों की बगीचा बनाने वाला एक बाप ही है। तुम हो खुदाई खिज़मत गार। तमोप्रधान को सतोप्रधान बनाने की खिज़मत करते हो। और कोई तकलीफ नहीं देते हैं। समझाना भी सहज है। कलियुग में है ही तमोप्रधान। अगर कलियुग की आयु बढ़ा देंगे तो और ही तमोप्रधान बनेंगे। परन्तु तुम जानते हो अभी हमको फूल बनाने वाला बाप आया है। कांटा बनाना रावण का काम है। बाप फूल बनाते हैं। बच्चों को समझाया जाता है शिव बाबा और स्वर्ग का वर्सा याद है? जिसको शिव बाबा याद है उनको जरूर स्वर्ग भी याद होगा। यह तो सहज बात है। यह अच्छी बनाई है शिव बाबा याद है? सिर्फ यह भी लिख दो स्वर्ग का वर्सा याद है? प्रभात फेरी निकालो तो दिखाओ हम प्रजापिता ब्रह्माकुमारियां भारत पर यह (ल०ना०) की राज्य स्थापन करते हैं। ब्राह्मणसो देवता बनते हैं। देवता सो क्षत्री, क्षत्री सो वैश्य यह बाजोली बता देनी है। बहुत सहज बातें हैं। किसको भी यह समझाना सहज है। हम ब्राह्मण सो देवता बनते हैं। ब्राह्मणों की चोटी माथे से ऊपर है। चोटी देखने से ही समझेंगे यह ब्राह्मण है। यह तो बहुत सहज है हम ने 84 का चक्र कैसे पूरा किया। इसीलिए विराट रूप में भी विष्णु को दिखाते हैं। पत्थर बुधि कुछ भी जानते नहीं। बच्चों को कितनी अच्छी नालेज मिलती है। और सभी है भक्ति। ज्ञान एक बाप ही समझाते हैं। सर्व का सदगतिदाता एक बाप ही है। इस समय बाप तुम बच्चों को पढ़ाते हैं। भक्ति मार्ग में फिर इसकी यादगार चलता है। तुम बच्चे जानते हो बाप ने हमको रास्ता बताया है कि तुम इस पढ़ाई से मेरे से यह वर्सा ले सकते हो। यह तो सहज पढ़ाई है। नर से नारायण बनने की पढ़ाई। वह कथा कहना रांग है कथा में एमआबजेक्ट है नहीं। पढ़ाई में एमआबजेक्ट है। तुम बता सकते हो। ल०ना० बनने की पढ़ाई आगे सुनी थी? उन्हों को ऐसा कर्म सिखलाने वाला कौन। बाप ने आकर सिखाया। गायन भी है कर्मों की गति गहन है। सो बहुत गुह्य है। बाप समझाते है रावण राज्य मे है दुःख। इस पढ़ाई से तुम ऐसे जबह जाते हो वहां काम होता नहीं। बाप जीत पहनाते हैं। तुमको कौन पढ़ाते हैं? वही ज्ञान का सागर है। तुम पत्थर बुधि क्या प्रश्न पूछ सकते हैं। पत्थर बुधि कहो बन्दर बुधि कहो। बाप आपे ही आकर सभी कुछ समझाते हैं। बाप कहते हैं तुम्हारे अविनाशी ज्ञान रत्नों की झोली भरता हूं। पूछने की बात ही नहीं। बेहद के बाप से सवाल क्या पूछेंगे। बाप जानते हैं मैं ज्ञान का सागर हूं। यहां तो ज्ञान कुछ है नहीं। सभी पत्थर ही पत्थर है। रावण को ही नहीं जानते। तुमको अकल मिलता है पूछने लिए। चिट्ठी मे लिख दो। प्रश्न पूछो। या कोई को छेड़ो आखीर रावण है कौन। कब से जन्म हुआ है। कब से जलाते हो। कहेंगे यह अनादी है। तुम अनेक प्रकार से प्रश्न पूछ सकते हो। वह भी समय आवेगा तुम पूछेंगे कोई रेसपाण्ड न करेंगे। तुम्हारी आत्मा याद की यात्रा में ऊपर हो जावेगी। अभी अपने ही दिल से पूछो हम तमोप्रधान बने हैं। दिल कहती है। अभी कर्मातीत अवस्था कहां हुई है होनी है। अभी तुम थोड़े हो इसलिए इतना कोई सुनते नहीं हैं। और तुम्हारी बात ही दूसरी है। पहले तो बताओ बापसंगम युग पर आते हैं। एक एक बात समझे तब ही आगे बढ़ना चाहिए। और बड़ा धीरज से प्यार से समझाना होता है। तुम्हारा एक ही प्रश्न है बस है। दिल से पूछो तुमको बाप कहते हैं गाड फादर कहते हो ना। परमपिता अक्षर भी अच्छा है। तो पूछो दो बाप है? लौकिक और पारलौकिक। पारलौकिक बाप से बेहद का वर्सा मिलेगा तब तो सतोप्रधान बनेंगे। सतोप्रधान सतयुग में थे। तुम तमोप्रधान बने हो कलियुग में। देवतायें थे। सो भी देवतायें इन बातों को नहीं जानते। बाप याद पड़े तो भी खुशी का पारा चढ़े। अपनको विश्व की बादशाही याद आती है। अभी फिर से स्थापन हो रही है। अभी बुधि का ताला नहीं खुलता है। शिव बाबा के मंदिर में सामने चित्र लगा कर समझाओ। शिव बाबा से स्वर्ग की बादशाही मिलती है। बच्चों को गुडनाईट।